कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए सुझाव
(SUGGESTIONS FOR IMPROVEMENT OF AGRICULTURAL PRODUCTIVITY)

कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं :

(1) **नवीन तकनीकों एवं उनके प्रयोग का व्यापक प्रचार**—कृषि उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए आधारभूत आवश्यकता कृषि की नवीन तकनीकी के प्रयोग में वृद्धि करना है। इसका अर्थ यह है कि भारतीय किसान को आधुनिक स्टील के हल, ट्रैक्टर, थ्रेसिंग मशीन, डीजल पम्प, आदि को व्यापक रूप से काम में लाना चाहिए। इसके लिए खेतों पर इनकी तकनीक का प्रदर्शन किया जाना चाहिए और बताया जाना चाहिए कि उनका उपयोग किस प्रकार लाभकारी है जिससे कि किसानों में आत्मविश्वास पैदा हो सके और वे उनके प्रयोग के लिए उत्सुक हो सकें। यदि आवश्यक हो तो उनके शिक्षण एवं प्रशिक्षण दोनों की ही सुविधा प्रदान की जानी चाहिए।

(2) **कृषि आदानों की उचित पूर्ति**—कृषि उत्पादन को बढ़ाने के लिए दूसरी आवश्यकता कृषि आदानों (Inputs) की उचित व्यवस्था करना है। इसके लिए (i) उन्नत बीज, (ii) खाद, व (iii) कीटनाशक औषधियां, आदि उचित मूल्य पर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होनी चाहिए।

(3) **सिंचाई सुविधाओं का विकास**—मानसून पर कृषि की निर्भरता को कम करने एवं दोहरी फसलें उत्पन्न करने के लिए सिंचाई सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए।

(4) **बाढ़ नियन्त्रण**—सिंचाई साधनों के विकास के साथ-साथ बाढ़ नियन्त्रण की भी व्यवस्था की जानी चाहिए जिससे कि कृषक निश्चिन्त होकर कृषि कार्यों में बराबर लगा रहे।

(5) **साख-व्यवस्था का विस्तार एवं ऋणग्रस्तता की समाप्ति**—कृषि क्षेत्र में नवीन तकनीक को प्रोत्साहन देने के लिए किसान को पर्याप्त साख-सुविधाएं उचित शर्तों पर उपलब्ध की जानी चाहिए जिससे कि वह आधुनिक औजार व रासायनिक खादें, आदि क्रय कर सके। इसके लिए ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण बैंकों एवं सरकारी बैंकों की संख्या में वृद्धि की जानी चाहिए। इसके साथ-साथ किसानों को पुराने पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाले ऋणों से भी छुटकारा मिलना चाहिए जिससे कि वह उत्पादन एवं विक्रय में महाजन या साहूकार के निवेश की उपेक्षा कर स्वतन्त्र रूप से सोच-विचार कर सकें।

(6) **भूमि सुधार कानूनों का प्रभावकारी क्रियान्वयन**—कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए एक सुझाव यह दिया जाता है कि भूमि सुधार कानूनों को प्रभावकारी ढंग से लागू किया जाना चाहिए जिससे वास्तविक कृषक भूमि का मालिक बन सके तथा भूमि की जोत का आकार भी बहुत छोटा न हो सके। ऐसा होने से कृषक में उत्पादन कार्य करने के लिए प्रेरणा बनी रहेगी और वह नवीनतम तकनीकों का उचित प्रयोग करने के लिए बाध्य हो जाएगा।

(7) **मूल्यों में स्थायित्व**—कृषि में पर्याप्त विनियोग को प्रोत्साहित करने के लिए यह भी आवश्यक है कि कृषि मूल्यों में स्थायित्व बना रहे। इसके लिए बुवाई से पूर्व उन मूल्यों की घोषणा सरकार द्वारा कर दी जानी चाहिए जिन पर सरकार फसल आने पर क्रय करने को तैयार है।

Scanned with CamScanner

(8) **विपणन व्यवस्था में सुधार**—किसान को अधिक उत्पादन करने को प्रेरित करने के लिए वर्तमान विपणन व्यवस्था में और अधिक सुधार किया जाना चाहिए तथा इस सम्बन्ध में उसे आवश्यक सुविधाएं भी दी जानी चाहिए जिससे कि उसको उचित विक्रय मूल्य प्राप्त हो सके। इस सम्बन्ध में सहकारी प्रणाली व नियमित बाजार व्यवस्था को व्यापक रूप से अपनाया जा सकता है।

(9) **कृषि अनुसन्धान**—कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए कृषि अनुसन्धान पर अधिक व्यय किया जाना चाहिए जिससे कि नए-नए अनुसन्धान परिणाम सामने आ सकें। इन अनुसन्धान परिणामों को किसानों तक पहुंचाने की भी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि वे उन्हें अपना सकें और उत्पादन बढ़ा सकें।

(10) **कृषि विकास कार्यक्रमों में उचित समन्वय एवं सहयोग**—कृषि विकास के लिए जो कार्यक्रम सरकार व अन्य संस्थाओं द्वारा अपनाए जाते हैं उनमें उचित समन्वय एवं सहयोग होना चाहिए।

(11) **जनसंख्या का कम दबाव**—खेती की उन्नति के लिए कृषि पर जनसंख्या का दबाव कम किया जाना चाहिए। इसके लिए देश में उद्योग-धन्धों का विकास किया जाना चाहिए तथा गांवों में विद्युत् की व्यवस्था होनी चाहिए जिससे कि ग्रामीण क्षेत्रों में उद्योगों का विस्तार हो सके।

(12) **यन्त्रीकरण**—उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषि में यन्त्रीकरण किया जाना चाहिए अर्थात् अधिक-से-अधिक ट्रैक्टरों, पम्पों, आधुनिक हलों, थ्रेसरों, आदि का प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए सेवा संस्थाओं का विस्तार किया जाना चाहिए जो इन यन्त्रों को छोटे किसानों को किराए पर दे सकें व बड़े किसानों को किस्तों पर बेच सकें।

(13) **वैज्ञानिक खेती**—खेती वैज्ञानिक ढंग से की जानी चाहिए जिसके लिए किसानों को आधुनिक सरकारी फार्मों को समय-समय पर दिखाया जाना चाहिए और बताया जाना चाहिए कि वैज्ञानिक ढंग से खेती किस प्रकार की जाती है तथा उससे क्या लाभ हैं।

(14) **मिश्रित खेती**—भारतीय कृषकों को मिश्रित खेती का ढंग अपनाना चाहिए। इसके लिए पशुपालन, डेरी व्यवसाय, फलों और सब्जियों को उगाने, आदि जैसे कार्यों को बढ़ावा देकर मिश्रित खेती को अपनाया जाना चाहिए।

(15) **अन्य सुझाव**—(i) गहन कृषि एवं बहुफसली कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। (ii) भू-क्षरण एवं पौधों की रक्षा की जानी चाहिए। (iii) फसल बीमा योजना का विस्तार किया जाना चाहिए। (iv) सहकारी खेती को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

Scanned with CamScanner